2

वर्ण-विचार
(Phonology)

वर्ण (Letter)

भाषा की वह सबसे छोटी इकाई जिसके खंड नहीं किए जा सकते, **वर्ण** कहलाती है।

वर्णों के मेल से 'शब्द' और शब्दों से 'वाक्य' बनते हैं। प्रत्येक शब्द वर्णों के सार्थक संयोजन से बनता है। इन्हें **अक्षर** भी कहा जाता है।

इन उदाहरणों को पढ़िए :

सवेरा	—	स् + अ + व् + ए + र् + आ	➤ 6 ध्वनियाँ
रोशनी	—	र् + ओ + श् + अ + न् + ई	➤ 6 ध्वनियाँ
यमुना	—	य् + अ + म् + उ + न् + आ	➤ 6 ध्वनियाँ
दोघट	—	द् + ओ + घ् + अ + ट् + अ	➤ 6 ध्वनियाँ

याद रखिए

- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।
- वर्णों से शब्द और शब्दों के मेल से वाक्य बनते हैं।
- किसी भाषा को सीखने के लिए सबसे पहले उसके वर्णों अथवा ध्वनियों को सीखना आवश्यक है।

बच्चो! आपने देखा कि उपर्युक्त उदाहरणों में प्रत्येक शब्द 6-6 ध्वनियों के मेल से बना है। इन ध्वनियों के और टुकड़े नहीं किए जा सकते क्योंकि ये सबसे छोटी इकाई हैं।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

बच्चो! प्रत्येक भाषा की एक निश्चित वर्णमाला होती है और प्रत्येक वर्णमाला में वर्णों की संख्या और क्रम निश्चित होते हैं; जैसे—

हिंदी वर्णमाला — अ, आ, इ, ई, ..., क, ख, ग, ..., च, छ, ..., आदि।

अंग्रेज़ी वर्णमाला — A, B, C, D, ..., Z आदि।

आइए, अब हिंदी वर्णमाला का अवलोकन एवं अध्ययन करते हैं जो इस प्रकार है:

हिंदी वर्णमाला

स्वर	—	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	11
अयोगवाह	—	अं	अः										2
व्यंजन	—	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्							
		च्	छ्	ज्	झ्	ञ्							
		ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	पंचम वर्ण						25
		त्	थ्	द्	ध्	न्							
		प्	फ्	ब्	भ्	म्							
अंतःस्थ	—	य्	र्	ल्	व्								4
ऊष्म	—	श्	ष्	स्	ह्								4
संयुक्त व्यंजन	—	क्ष्	त्र्	ज्ञ्	श्र्								4
अतिरिक्त व्यंजन	—	ड़्	ढ़्										2

इस प्रकार हिंदी की संपूर्ण वर्णमाला में 52 वर्ण होते हैं।

वर्णों के भेद (Kinds of Letters)

वर्णों के भेद
स्वर | व्यंजन

हिंदी वर्णमाला में उच्चारण और प्रयोग के आधार पर वर्ण के दो भेद हैं :

1. स्वर 2. व्यंजन

1. स्वर (Vowels)

जिन वर्णों का उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं। इनका उच्चारण करते समय वायु मुख से बिना किसी रुकावट के बाहर निकलती है। ये स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं जो इस प्रकार हैं :

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वरों के भेद (Kinds of Vowels) : उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर के तीन भेद होते हैं :

क. ह्रस्व स्वर ख. दीर्घ स्वर ग. प्लुत स्वर

क. ह्रस्व स्वर (Short Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं : अ, इ, उ, ऋ।

ख. दीर्घ स्वर (Long Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

ग. प्लुत स्वर (Longer Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे—ओ३म, राऽम आदि। प्लुत स्वर का चिह्न (ऽ) है। इसका प्रयोग प्रायः पुकारने, जोर से गाने अथवा रोने के समय किया जाता है।

विशेष : हिंदी में प्लुत स्वर का प्रयोग अब बिलकुल बंद हो गया है। इसका प्रयोग अब केवल **संस्कृत भाषा** में होता है।

स्वरों की मात्राएँ (Signs of Vowels)

जब स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है, तब ये अपने मूल रूप में प्रयोग नहीं होते, इनका स्वरूप बदल जाता है। व्यंजनों के साथ इनके चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। स्वरों के ये चिह्न मात्रा कहलाते हैं। 'अ' को छोड़कर शेष सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं। 'अ' स्वर सभी व्यंजनों में शामिल होता है। सभी व्यंजन 'अ' की सहायता से बोले जाते हैं।

हिंदी में स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार हैं :

स्वर :	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा :	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
शब्द :	पल	पाल	पिता	पीकर	पुल	पूना	पृथक	पेट	पैसा	पोता	पौधा

याद रखिए

- किसी व्यंजन को 'अ' रहित लिखने के लिए उसके नीचे हलंत (्) लगाते हैं; जैसे—क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त् ... आदि।
- 'अ' सहित व्यंजन इस प्रकार लिखे जाते हैं; जैसे–क, ख, च, छ, ट, ठ, त.... आदि।
- 'र' के साथ 'उ'/'ऊ' स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार प्रयोग करते हैं; जैसे–
  र् + उ = रु ➤ गुरु, रुचि, रुद्र, रुदन आदि।
  र् + ऊ = रू ➤ रूढ़, रूप, रूमाल, अमरूद आदि।
- 'ऋ' स्वर का उच्चारण 'रि' की तरह होता है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत से आए शब्दों में ही होता है; जैसे—कृषक, वृषभ, कृपाण, नृप आदि।
- 'ऋ' स्वर की मात्रा (ृ) व्यंजन के पैरों में लगती है; जैसे—कृति, कृतिका, वृत्ति आदि।

अयोगवाह (Improper Consonants)

हिंदी वर्णमाला में अं और अः दो वर्ण और होते हैं, जिन्हें अयोगवाह कहते हैं। स्वतंत्र रूप से प्रयोग न होने के कारण इनकी गणना न तो स्वर में होती है और न ही व्यंजन में। व्याकरण की दृष्टि से 'अं' को अनुस्वार और 'अः' को विसर्ग कहते हैं। अतएव,

जो वर्ण स्वर और व्यंजन के अतिरिक्त होते हैं, उन्हें **अयोगवाह** कहते हैं।

1. अनुस्वार (Nasal Sound ं) : अनुस्वार का उच्चारण करते समय वायु केवल नाक से बाहर आती है। इसका चिह्न शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) रूप में लगाया जाता है। इसे ही अनुस्वार कहते हैं; जैसे—अंदर, बंदर, संदूक, जंगल आदि।

2. अनुनासिक (Semi-Nasal Sound ँ) : अनुनासिक के उच्चारण के समय वायु नाक और मुख दोनों से बाहर आती है। इसका चिह्न शिरोरेखा के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) रूप में लगाया जाता है। यह स्वतंत्र ध्वनि नहीं है। इसका प्रयोग स्वरों के साथ होता है; जैसे—चाँद, माँगा, लहँगा, काँच, जाँच आदि।

• विसर्ग (Colon :) : इस ध्वनि का उच्चारण 'ह्' के समान होता है। यह स्वर नहीं है लेकिन इसे 'अ' के साथ जोड़कर 'अः' की तरह लिखा जाता है। इसका प्रयोग केवल तत्सम (संस्कृत) शब्दों में ही किया जाता है; जैसे—अतः, स्वतः, प्रातः, प्रायः, संभवतः आदि।

• आगत ध्वनि (ॅ) : ऑ अंग्रेज़ी से हिंदी भाषा में आई ध्वनि है, जो स्वरों में गिनी जाती है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है। इसका प्रयोग अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी में लिखते समय ही किया जाता है; जैसे—शॉल, डॉल, कॉलेज, डॉक्टर, लॉकर आदि।

2. व्यंजन (Consonants)

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु थोड़ा रुककर मुख से बाहर निकलती है। हिंदी में व्यंजनों की संख्या 33 (क् से ह्) होती है। संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर इनकी संख्या 37 (सैंतीस) होती है।

व्यंजन के भेद (Kinds of Consonants) : स्पर्श के आधार पर हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं :

क. स्पर्श व्यंजन　　ख. अंतःस्थ व्यंजन　　ग. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन (Mutes) : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों (कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ) को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों की कुल संख्या 25 है। इन व्यंजनों को पाँच वर्गों में बाँटा गया है; जैसे—

वर्ग		व्यंजन					उच्चारण-स्थान	प्रकार
कवर्ग	➤	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ	कंठ्य
चवर्ग	➤	च	छ	ज	झ	ञ	तालु	तालव्य
टवर्ग	➤	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा	मूर्धन्य
तवर्ग	➤	त	थ	द	ध	न	दंत	दंत्य
पवर्ग	➤	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ	ओष्ठ्य

2. अंतःस्थ व्यंजन (Semi-Vowels) : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ पूरी तरह मुख के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती, वे अंतःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। ये व्यंजन संख्या में चार हैं: य, र, ल, व।

3. ऊष्म व्यंजन (Sibilants) : ऊष्म का अर्थ है–गरम। जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के विभिन्न भागों से टकराकर ऊष्मा (गरमी) पैदा करती है, वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। ऊष्म व्यंजन संख्या में चार हैं : श, ष, स, ह।

याद रखिए

- प्रत्येक वर्ग का अंतिम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) पंचमाक्षर/पंचम वर्ण कहलाता है।
- प्रत्येक वर्ग का नाम अपने वर्ग के प्रथम वर्ण के आधार पर रखा गया है।

उच्चारण-स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
(Classification of Consonants on the Basis of Place of Pronunciation)

व्यंजनों का उच्चारण करते समय श्वास वायु मुख के किसी-न-किसी भाग से टकराती है। यह जिस भाग से टकराती है, वही उस व्यंजन का उच्चारण-स्थान कहलाता है। इन उच्चारण-स्थानों के आधार पर व्यंजनों को निम्नांकित दस वर्गों में रखा गया है :

कंठ्य – कंठ (गले) से उच्चारित होने के कारण इन्हें कंठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे—अ, आ, ऑ, अः, क, ख, ग, घ, ङ।

तालव्य – तालु से उच्चारित होने के कारण इन्हें तालव्य वर्ण कहते है: जैसे—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।

मूर्धन्य – मूर्धा (मुख की छत) से उच्चारित होने के कारण इन्हें मूर्धन्य वर्ण कहते है; जैसे—ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, र, ष।

दंत्य – दाँतों से उच्चारित होने के कारण इन्हें दंत्य वर्ण कहते हैं; जैसे—त, थ, द, ध, न, ल, स, ज।

ओष्ठ्य – ओंठों से उच्चारित होने के कारण इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

नासिक्य – मुख और नासिका से उच्चारित होने के कारण इन्हें नासिक्य वर्ण कहते हैं; जैसे—अं, ङ, ञ, ण, न, म।

कंठोष्ठ्य – कंठ और ओंठों से उच्चारित होने के कारण इन्हें कंठोष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे—ओ, औ।

दंतोष्ठ्य – दाँतों और ओंठों से उच्चारित होने के कारण इन्हें दंतोष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे—व।

कंठ-तालव्य – कंठ और तालु से उच्चारित होने के कारण इन्हें कंठ-तालव्य वर्ण कहते हैं; जैसे—ए, ऐ।

प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
(Classification of Consonants on the Basis of Articulation)

क. स्पर्शी व्यंजन : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय उच्चारण करने वाले अवयव ऊपर उठकर उच्चारण-स्थान को स्पर्श करते हैं और वायु का मार्ग रोकते हैं, उन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं; जैसे—क्, ख्, ग्, घ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, त्, थ्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ।

ख. संघर्षी व्यंजन : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु दो उच्चारण स्थानों के बीच से संघर्ष करती हुई अर्थात् रगड़ खाकर बाहर निकलती है, उन्हें संघर्षी व्यंजन कहते हैं; जैसे—श, ष, स, ह, ख़, फ़, ज़।

ग. स्पर्श-संघर्षी व्यंजन : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय दो उच्चारण अवयव एक-दूसरे का स्पर्श करके तुरंत अलग नहीं होते और अलग होने पर जिनमें संघर्ष होता है, उन्हें स्पर्श-संघर्षी व्यंजन कहते हैं; जैसे—च, छ, ज, झ। इनके उच्चारण के समय जीभ के अगले भाग का तालु के साथ स्पर्श-संघर्ष होता है।

घ. उत्क्षिप्त व्यंजन : उत्क्षिप्त का अर्थ है—फेंका हुआ। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ का अगला भाग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से वापस आता है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ 'उत्क्षिप्त व्यंजन' के उदाहरण हैं।

स्वर-यंत्रियों में होने वाले कंपन के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
(Classification of Consonants on the Basis of Trembling in the Glottis)

हमारे गले में एक स्वर-यंत्र होता है जिसमें मासंपेशियों की दो झिल्लियाँ होती हैं। इन्हीं को स्वर-यंत्र कहा जाता है। उच्चारण के समय इनमें कंपन होता है। इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए गए हैं :

क. सघोष व्यंजन (Wavering Sound) : जिन वर्णों के उच्चारण में वायु स्वर-यंत्रिका से टकराकर बाहर निकलती है और घर्षण पैदा होता है, उन्हें सघोष व्यंजन कहते हैं। हिंदी के स्वर भी सघोष ध्वनियाँ हैं; जैसे—

स्वर : अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यंजन : ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह।

ख. अघोष व्यंजन (Non-wavering Sound) : जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं; जैसे—क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स।

श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
(Classification of Consonants on the Basis of Breathing)

उच्चारण के समय श्वास-वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं :

क. अल्पप्राण व्यंजन (Non-aspirated Consonants) : जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम समय तथा वायु की मात्रा कम व्यय होती है, वे अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण 'अल्पप्राण व्यंजन' होता है; जैसे—

कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	अंत:स्थ
⇓	⇓	⇓	⇓	⇓	⇓
क, ग, ङ	च, ज, ञ	ट, ड, ण	त, द, न,	प, ब, म	य, र, ल, व

ख. महाप्राण व्यंजन (Aspirated Consonants) : जिन व्यंजनों के उच्चारण में समय तथा वायु की मात्रा अधिक व्यय होती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा वर्ण 'महाप्राण व्यंजन' होता है; जैसे—

कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	ऊष्म
⇓	⇓	⇓	⇓	⇓	⇓
ख, घ	छ, झ	ठ, ढ, ढ़	थ, ध	फ, भ	श, ष, स, ह

अन्य व्यंजन (Other Consonants)

• **संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants) :** दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यंजनों के परस्पर मेल से बना एक नया व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाता है। संयुक्त व्यंजन मुख्य रूप से चार हैं : क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

क् + ष = क्ष	➤ कक्ष	दक्ष	भिक्षा	भिक्षुक	ज् + ञ = ज्ञ	➤ यज्ञ	ज्ञान	कृतज्ञ
त् + र = त्र	➤ पत्र	छत्र	त्रिभुज	त्रिफला	श् + र = श्र	➤ श्रवण	श्रमिक	आश्रय

उपर्युक्त संयुक्त व्यंजनों के अतिरिक्त दो भिन्न व्यंजनों से बने कुछ अन्य संयुक्त व्यंजनों के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। इन संयुक्त व्यंजनों को व्यंजन गुच्छ भी कहा जाता है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

क् + त = क्त	➤ भक्त	रक्त	वक्त	स् + त = स्त	➤ अस्त	मस्त	ध्वस्त
क् + ख = क्ख	➤ मक्खी	लक्ख	मक्खन	ष् + ट = ष्ट	➤ कष्ट	दुष्ट	भ्रष्ट

• **द्वित्व व्यंजन (Dubious Consonants) :** जब एक स्वर रहित व्यंजन का समान स्वर सहित व्यंजन से मेल होता है, तब वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे—

त् + त = त्त	➤ पत्ता	छत्ता	सत्ता	ट् + ट = ट्ट	➤ लट्टू	गट्टू	मट्टू
च् + च = च्च	➤ कच्चा	बच्चा	सच्चा	ज् + ज = ज्ज	➤ छज्जा	सज्जा	लज्जा

'र' का संयोग

'र' व्यंजन का दूसरे व्यंजनों से संयोग निम्नलिखित नियमों के आधार पर होता है :

1. जब स्वर रहित 'र' को दूसरे व्यंजन से मिलाते हैं, तब 'र' दूसरे व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। इसे र-रेफ़ भी कहते हैं; जैसे—

   र् + म = र्म ➤ कर्म, चर्म, धर्म, आचार्य, आर्य, कार्य आदि।

2. जब स्वर रहित व्यंजन को 'र' के साथ मिलाते हैं, तो 'र' को इस प्रकार लिखते हैं; जैसे—

   भ् + र = भ्र ➤ भ्रम, क्रम, श्रम, चक्र आदि।

3. जिन व्यंजनों में खड़ी पाई नहीं होती, उनके साथ 'र' को इस प्रकार लिखते हैं; जैसे—

ट् + र = ट्र ➤ ट्रक, ट्रेन; ड् + र = ड्र ➤ ड्रम, ट्राम

4. 'स' तथा 'त' के साथ 'र 'को इस प्रकार लिखते हैं; जैसे—

स् + र = स्र ➤ सहस्र, स्रोत; त् + र= त्र ➤ त्रिभुज, त्रिगुण, नेत्र।

5. 'श' को 'र' के साथ इस प्रकार मिलाकर लिखते हैं; जैसे—

श् + र = श्र ➤ श्रेष्ठ, श्रमदान, श्रीमान, श्रद्धा आदि।

वर्ण-विच्छेद (Disjoin)

'विच्छेद' का अर्थ है—अलग करना।

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करके लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद करते समय स्वरों को मूल रूप में लिखा जाता है तथा व्यंजनों के नीचे हलंत (्) लगाना आवश्यक होता है।

इन उदाहरण को देखिए :

आज़ाद	— आ + ज़् + आ + द् + अ	दिवस	— द् + इ + व् + अ + स् + अ
वीरता	— व् + ई + र् + अ + त् + आ	मैदान	— म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
संन्यासी	— स् + अं + न् + य् + आ + स् + ई	विद्वान	— व् + इ + द् + व् + आ + न् + अ
भिक्षुक	— भ् + इ + क् + ष् + उ + क् + अ	मच्छर	— म् + अ + च् + छ् + अ + र् + अ

ध्यान रखिए

- उच्चारण के समय वर्ण ध्वनि जिस स्थान पर आ रही है, विच्छेद करते समय उसे उसी स्थान पर लिखें।

बलाघात (Stress)

शब्दों का उच्चारण करते समय उसके प्रत्येक अक्षर पर समान बल नहीं दिया जाता। किसी पर अधिक बल दिया जाता है, तो किसी पर कम। उच्चारण के इसी बल को बलाघात कहते हैं। बलाघात दो प्रकार का होता है :

1. शब्द बलाघात 2. वाक्य बलाघात

1. शब्द बलाघात (Word Stress) : जब किसी शब्द का उच्चारण करते समय उसके सभी अक्षरों पर समान बल नहीं दिया जाता। बल्कि किसी अक्षर पर अधिक और किसी पर कम बल दिया जाता है, तो वहाँ शब्द बलाघात होता है; जैसे—'पिता' शब्द में 'ता' पर, 'माधुरी' शब्द में 'मा' पर और 'रहीम शब्द में 'ही' पर बलाघात है।

2. वाक्य बलाघात (Sentence Stress) : एक ही वाक्य में शब्द विशेष पर बल देने से कभी-कभी उसके अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है; जैसे—

- मैं आज कविता पढ़ूँगा। ➤ यहाँ 'मैं' पर बलाघात होने से वाक्य का अर्थ हुआ—कविता पढ़ने का काम केवल मैं करूँगा, कोई अन्य नहीं।
- मैं आज कविता पढ़ूँगा। ➤ 'आज' पर बलाघात होने से वाक्य का अर्थ होगा—कल या परसों या किसी अन्य दिन नहीं बल्कि आज मैं कविता पढ़ूँगा।
- मैं आज कविता पढ़ूँगा। ➤ 'कविता' पर बलाघात होने से वाक्य का अर्थ होगा—कल या पहले चाहे कुछ और पढ़ा हो, पर आज कविता पढ़ूँगा।

अनुतान (Distress)

बोलते समय सुर में होने वाले उतार-चढाव (आरोह-अवरोह) को **अनुतान** कहते हैं।

अनुतान का महत्व शब्द तथा वाक्य दोनों स्तरों पर होता है; जैसे—

- **शब्द स्तर पर अनुतान :** अच्छा ➤ सामान्य कथन / स्वीकृति

अच्छा? ➤ प्रश्नवाचक
अच्छा! ➤ आश्चर्यसूचक

• वाक्य स्तर पर अनुतान : शिवांगी आएगी। सामान्य कथन
शिवांगी आएगी? प्रश्नवाचक
शिवांगी आएगी! आश्चर्यसूचक

संगम अथवा संहिता (Meeting)

उच्चारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि किन पदों को प्रवाह में पढ़ा जाना है और किनके मध्य थोड़ा रुकना है। अतः,

दो पदों के उच्चारण के समय उचित विराम देना **संगम** कहलाता है।

जैसे—
- मेरे सिर का दर्द बढ़ता ही जा रहा है। (सिर + का)
- हमारे लिए सिरका लेकर आना। (सिरका)
- रवि ने मुझे पुस्तक न दी। (न + दी)
- यह नदी बहुत गहरी है। (नदी)

आओ दोहराएँ

- वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
- हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं : स्वर, व्यंजन।
- स्वर के तीन भेद होते हैं : ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर।
- अंग्रेज़ी से हिंदी भाषा में आई ध्वनि आगत ध्वनि कहलाती है।
- स्पर्श के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं : स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन।
- प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के चार भेद हैं : स्पर्शी व्यंजन, संघर्षी व्यंजन, स्पर्श-संघर्षी व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन ।
- स्वर-यंत्रियों में होने वाले कंपन के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं : सघोष व्यंजन, अघोष व्यंजन।
- श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं : अल्पप्राण व्यंजन, महाप्राण व्यंजन।
- शब्द-उच्चारण के समय प्रत्येक अक्षर पर लगने वाला असमान बल बलाघात कहलाता है।

अब बताइए

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)**

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. वर्ण ध्वनि का कैसा रूप है?
(a) मौखिक ☐ (b) लिखित ☐ (c) सांकेतिक ☐ (d) कोई नहीं ☐

ख. अनुस्वार का चिह्न किसके स्थान पर प्रयोग होता है?
(a) पंचमाक्षर के स्थान पर ☐ (b) विसर्ग के स्थान पर ☐ (c) प्लुत स्वर के स्थान पर ☐ (d) आगत ध्वनि में ☐

ग. स्वर रहित व्यंजन का समान स्वर सहित व्यंजन से मेल क्या कहलाता है?
(a) संयुक्त व्यंजन ☐ (b) महाप्राण व्यंजन ☐ (c) द्वित्व व्यंजन ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

घ. बोलते समय सुर में होने वाला उतार-चढ़ाव क्या कहलाता है?
(a) बलाघात ☐ (b) अनुतान ☐ (c) संगम ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

ङ. वर्णमाला किसे कहते हैं?

(a) वर्णों के व्यवस्थित समूह को ☐ (b) वर्णों के क्रमबद्ध समूह को ☐

(c) वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह को ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

च. अघोष व्यंजन किन्हें कहते हैं?

(a) जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन होता है ☐

(b) जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन नहीं होता है ☐

(c) जिन व्यंजनों के उच्चारण में समय तथा वायु की मात्रा कम व्यय होती है। ☐

(d) जिन व्यंजनों के उच्चारण में समय तथा वायु की मात्रा अधिक व्यय कम व्यय होती है ☐

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. ______________ भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

ख. ______________ स्वर का प्रयोग प्रायः पुकारने, जोर से गाने अथवा रोने के समय करते हैं।

ग. जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें ______________ कहते हैं।

घ. जिन वर्णों के उच्चारण में वायु स्वर-यंत्रिका से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें ______________ व्यंजन कहते हैं।

ङ. शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करके लिखना ______________ कहलाता है।

3. दो-दो उदाहरण लिखिए:

क् + ख = ______________ ______________ ष् + ट = ______________ ______________

ग् + य = ______________ ______________ ट् + ठ = ______________ ______________

च् + च = ______________ ______________ ब् + ब = ______________ ______________

4. वर्ण-विच्छेद करके लिखिए:

सियार — ______________ पौराणिक — ______________

दीवार — ______________ मस्जिद — ______________

शृगाल — ______________ तात्पर्य — ______________

विद्यालय — ______________ भगौड़ा — ______________

5. सोचकर उत्तर लिखिए:

क. वर्णमाला में कितने प्रकार के वर्ण होते हैं? सभी को क्रमानुसार लिखिए।

ख. अनुस्वार और अनुनासिक किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

ग. स्पर्शी और संघर्षी व्यंजन किन्हें कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

घ. सघोष और अघोष व्यंजन से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण लिखिए।

ङ. बलाघात किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के होते हैं?

च. संगम अथवा संहिता से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण लिखिए।

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

❖ बहुत-से शब्द उलटे और सीधे पढ़े जाने पर वही रहते हैं; जैसे—'कटक', 'मलयालम'। आप भी अपने सहपाठियों या घनिष्ठ मित्रों के साथ मिलकर इस प्रकार के शब्दों की खोज कीजिए और उनकी सूची बनाइए।